

क्र.नं. 26

४८ व्या ९२

व्यांक रज

1612

मध्यम



(1)
एताभिः। इत्यादि॥ एवकिंशब्दः। का। के। काः। इत्यादि॥ त्य
दादीनांधेरभावः। मकारांतोइदमृशब्दः। इयंस्त्रियां॥
इदमृशब्दस्यस्त्रियामिर्यभवतिस्सिंहितस्य। इर्यं॥
इमे। इमाः। इर्मा। इमे। इमाः। अनयोः। सोः। अनया। स्यः।
आभ्यां। आभिः। अस्मै। आभ्यां। आभ्यः। अस्याः।
आभ्यां। आभ्यः। अस्याः। अनयोः। आसी। असी।
अनयोः। आसु॥ चकारांतश्चशब्दः। वोक्ताः। वाक्
माने। त्वक्ता। त्वग्। त्वौ। त्वचः। हेत्वक्ता। हेत्वग्। त्व
क्षु॥ इत्यादि। एवकिंश्चवाचप्रपठतयः। ऋक्। ऋग्।
ऋचौ। ऋचः। इत्यादि। वाक्ता। वाग्। वाचौ। वाचः॥

इत्यादि। पकारांतो अप्रशब्दो नित्यं बहुवचनांतः। अप्रअ
 स्रइति स्थिते। न संमहते इति दीर्घः। आपः। अपः। क्षिदपी।
 अबादीनां पकारे परे दत्वं भवति। अद्भिः। अद्भ्यः। अ
 द्भ्यः। अपी। अप्सु॥ इत्यादि। शकारांतो दिश्रशब्दः। दि
 शां। दिश्रदश्रस्त्रश्रमश्रइत्यादीनां रसे पदान्ते च कु
 र्वं भवति। दिक्। दिग्। दिशौ। दिशः। हेदिक्। हेदिग्। ३।
 दिशौ। दिशौ। दिशः। दिशा। दिग्घी। दिग्भिः। इत्यादि। ष
 कारांतो स्थिपूशब्दः। षोडशति इत्यं वावसाने। त्विट्। त्वि
 इ। त्विषौ। त्विषः। हे त्विट्। हे त्विइ। ३। त्विषी। त्विषौ॥
 त्विषः। त्विषा। त्विष्ठा। त्विड्भिः। इत्यादि। आशिष्र

राष्ट्रसुसज्जुष्टराष्ट्रवन्नेयः। आशीः। आशिषौ। आशि
षः। हे आशीः। आशिषी। आशिषौ। आशिषः। आशिषा।
आशीष्या। आशीषिः। इत्यादि। स्त्रिलिंगस्यादसूराष्ट्रस्य
सौनविशेषः। द्विवचनादौटुटेरत्वेकतेअनीतरमाव
तः स्त्रिया। दीर्घत्वे। विभक्तिकायं पञ्चान्मादइतिङ्गस्व
स्यङ्गस्वउकारो दीर्घस्य दीर्घञुकारः। असौ। अम्हा।
अमूः। अमुम्॥ अम्हा। अमः। अमुया। अमूष्या। अ
मूषिः। अमुष्ये॥ अमूष्या। अमूष्यः। अमुष्याः॥
अमूष्या। अमूष्यः। अमुष्याः। अमुयोः। अमूषौ॥
अमुष्या॥ अमुयोः। अमूषु॥ इतिहसितास्त्रिलिङ्गाः॥
१ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

(3)

अथ ह्रस्वांतानपुंसकलिङ्गाः प्रदृश्यन्ते रेफांतो वारुणाष्टः।
स्यमोर्लुक्। वाः। वारी। वारि। पुनरपि वाः। वारी। वारि।
अयमिति विशेषणान्तरमभवति। वारा। वार्यः।
वार्षिः। इत्यादि। चतुर्ः। चतुर्ः। चतुराम्। चतुर्वेष्टाम्।
चत्वारि। चत्वारि। चतुर्विः। चतुर्भ्यः। चतुर्ष्यः। चतुर्ः।
चतुर्षु॥ नकारांतो अहन्नाष्टः। अङ्गः। अहन्ना
ष्टस्य सकारो भवति रसे पदांतो च॥ षष्ठीनिषेधश्च
देशस्तदंतस्य हेयः। स्त्रीर्विसर्गः। अहः। अल्लोपः।
इमोर्वेष्टाः। अङ्गः। अहनी। अहानि। पुनः० अहः।
अङ्गः। अहनी। अहानि। अल्लोपः। स्वरेऽम्बुक्ताय

६६

॥६६॥

3A)

सादौ। अङ्का। नस्य सकारे सस्य विसर्गः। हवे। उवो। अ
होभ्यां। अहोभिः। अङ्के। अहोभ्यां। अहोभ्यः। अङ्कः। अ
होभ्यां। अहोभ्यः। अङ्कः। अङ्कोः। अङ्कां। वेङ्गोः। अङ्कि।
अहनि। अङ्कोः। अहस्यु। इत्यादि। ब्रह्म नूराष्टस्य रसे
पदांते च नकारलोपः। ब्रह्म। ब्रह्मणो। ब्रह्माणि। पुन
रपि। ब्रह्म। ब्रह्मणो। ब्रह्माणि। ब्रह्मेणा। ब्रह्मेभ्यः। ब्रह्म
भिः। इत्यादि। एवं चर्म चर्म नूराष्टतयः। चर्म। चर्मणो।
चर्माणि। चर्म। चर्मणो। चर्माणि। पुनरपि। इत्यादि। नां ताद
दंतता। दसिदि० त्रयोवालोपः। परमेव्योमनू। सवा
भरतानि। दं दस्यागमजो नागमं जयलोपालोपोव
नां तादडे लोपिः। अर्दतासे लोपः। ॥२॥

(4)

क्तव्यो। व्योम। व्योमनी। व्योमानि। पुन०॥ व्योम्ना। व्योमभ्यां।
व्योमभिः। इत्यादि। त्यदादीनां स्य मोलुक् क्तुते टेरत्वं न
भवति। लुगिति विशेषणार्थः। स्याद। विति विशेषणार्थः।
दिवचनादौ टेरत्वे च कृते कुलशब्दवत्। सत्। त्ये।
त्यानि। पुन०॥ यत्। यो। यानि। पुन०॥ तत्। ते। तानि।
पुन०॥ एत्। एते। एतानि॥ एन्। एने। एनानि। शेषं
पुंवत्। किम्। के। कानि। पुन०॥ केन। काभ्यां। कैः। इत्यादि।
मकारां तोद्दम्। राद्यः। इद्। इमे। इमानि। पुनरपि०॥
अनेन। आभ्यां। एभिः। इत्यादि। तकारां तोज्जगत्। रा
द्यः। जगत्। जगती। जगति। पुन०॥ जगता। जगद्भ्यां॥

॥६१॥

॥६१॥

(4A)

जगद्भिः। इत्यादि। महत्तराद्ये नुनसं महत इति दीर्घः। मह
त्। महती। महान्ति। पुन०। महता। महद्भ्यां। महद्भिः। इ
त्यादि। षकारांतो हविष्पूराद्यः। दोषां। हविः। हविषी। ह
वीषि। पुन०। हविषा। हविष्यो। हविषिः। इत्यादि। एवं
सकारांताः पयस्स्तेजस्वचस्प्रपष्टतयः। पयः। प
यसी। पयांसि। पुन०। पयसा। पयोर्विसर्गः। हवे। उवा।
पयोभ्यां। पयोक्विः। पयसे। इत्यादि। तेजः। तेजसी। ते
जांसि। पुन०। इत्यादि। वचः। वचसी। वचांसि। पुन०।
इत्यादि। अदस्तराद्यस्यस्यमालुकि कृते स्त्रौ वि

सर्गः। द्विवचनादौटेरत्वेकतेमत्वोत्वेचनामिनस्वर
(५) इति नुमागमः। अदः। अमुनी। अमूनि। पुनः॥ अमु
ना। अमूभ्या। अमीभिः। अमुभ्यो। अमूभ्या। अमी
भ्यः। इत्यादि॥ ॥ इति ह सांता नष्टं सकल्लिंगाः॥ ॥ ६॥
॥ अथ युष्मदस्मदोः स्वरूपे निरूप्यते। तयोश्च
वाच्यलिंगत्वात्त्रिष्वपि लिंगेषु समानं रूपं नेर्यं॥ त्व
महं सिना। युष्मदस्मदोः सिसहितयोस्त्वं अहं इ
त्येतावादेशौ सवतः। यथासंख्येन। त्वं। अहं। युवा ॥ ६॥
वौ द्विवचने। युष्मदस्मादौ द्विवचने परे युवआव

(5A)

इत्येतावादेशौ भवतः। आमौ। युष्मदस्मदोः परौ आ-
सृभवति। युवां। आवां। सूर्यवयं जसा॥ जसा सहितयोः
युष्मदस्मदोः सूर्यवयं इत्येतावादेशौ भवतः। सूर्य-
वयं। त्वन्मदेकत्वे। युष्मदस्मदोस्तद्वन्मद इत्येतावादे-
शौ भवतः। एकत्वे गम्यमाने। आमृसौ॥ युष्मदस्मदो-
ष्टेशत्वं भवति। अमिसकारो भवति च परे। त्वां। मां। युवां।
आवां। त्यादेष्टेरत्वे कृते रासीति दीर्घत्वं रासो नोक्त-
व्यः। युष्मान्। अस्मान्। त्वन्मदेकत्वे। एटाङ्योः। युष्म-
दस्मदोष्टेरत्वं भवति टाडि० इत्येतयोः परयोः। अया-
देशः। त्वया। मया। युवाभ्यां। आवाभ्यां। युष्माभिः। अस्मा

(6)

॥६९॥

भिः। तुभ्यंमर्ह्यड०या॥ड०यासहितयोर्युष्मदस्मदोस्तुभ्यं
मर्ह्यइत्येतावादेशौभवतः। तुभ्यं। मर्ह्य। युवाभ्यां। आवा
भ्यां। भ्यसस्माद्युष्मदस्मदोःपरोभ्यसुस्तीभवति॥
सकारोभकारादित्वव्यावृत्त्यर्थः। तेनात्वेनभवतः॥
युष्मभ्यां। अस्मभ्यां। ड०सिभ्यसोस्तुः। ण्यं चम्पाड०सि
भ्यसोस्तुभवति। सकारः सवादेशार्थः। त्वत्। मत्। यु
वाभ्यां। आवाभ्यां। युष्मत्। अस्मत्। तवममड०सा। ड०
सासहितयोर्युष्मदस्मदोस्तवममइत्येतावादेशौभव
तः। तव। मम। युवयोः। आवयोः। सवादित्वात्सुट्। सा
मार्क। युष्मदस्मदोःपरसामआर्कभवति। युष्मार्क।

॥६९॥

दक्षिणस्यादिशिवसंति इत्यस्मिन्नर्थे दक्षिणादि। वसं
 तिर्चांडाब्दाः॥ किमः सामान्ये विदादिः॥ कश्चिद्। कश्च
 न। क्च। क्चन। क्चिद्। तदधीनकास्त्र्ययोर्वासाद्। रा
 शः अधानराजसाद्। सर्वे नरमृगसमसाद्। जुष्युर्य
 गीकरणे। उरसि कृत्वा इति विग्रहे निपात्यते। उरी कृत्या
 उररी कृत्य। अंगी कृत्येत्यर्थः॥ सद्यादिः काळे निपात्यते।
 तस्मिन्नेव काळे सद्यः॥ अस्मिन् दिने अद्या तस्मिन्नेव
 क्षणे सपदि॥ अस्मिन् काळे अधुना इदानीं। एतस्मि
 न्काळे संप्रति। संप्रति। स्मृति। तूष्णीं। पूर्वस्मिन् दिने स
 र्वद्यः। परेद्युः। अपरेद्युः। यस्मिन् इति यर्हि। तस्मिन्नि

(७)

तितर्हि॥ ॥ प्रादिरुपसर्गः। प्रा। परा। अपा। सं। अनु। अवा।
निर। दुर्। वि। आ। उ। नि। अधि। अपि।। अति। सु। उर। अ
भि। प्रति। परि। उप्। श्रु। अंतर्। आविट्। ॥ अर्यगण उ
पसर्गसंज्ञो भवति॥ प्राग्घातोः। उपसर्गः प्राग्घातोः प्र
योक्तव्यः॥ प्रादीनां धात्ववयवमंतरेण प्रयोक्तुमत्राक्य
त्वात् त्रयथासंभवं धात्वर्थान्वयेन अथो ग्राह्यः। तथा
चोक्तं वार्तिके। धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित्तमनुव
र्तते। तमेव विज्ञानेष्ट्यन्योऽनर्थकान्यः प्रयुज्यते॥ ॥
तदव्ययं। तदिदं चादिशब्दरूपमव्ययसंज्ञं भवति।
रकाद्यंतं च॥ स्कादिप्रत्ययां तमव्ययसंज्ञं भवति। आदि

॥७२॥

॥७२॥

गृहणात्। का। खिन्। क्यप्। तुम्। णप्। डाच्। धा। वत्।
शस्। सु। आम्। क्त्वस्। यक्त्। इत्यादयो ज्ञेयाः। अ
व्ययादिभक्तैर्लुक्। अव्ययात्परस्याः विभक्तैर्लुक्।
भवति। न शब्दनिर्देशः। अव्ययानां न लिङादिनियमः।
उक्तं हि। सदृशं त्रिषु लिङेषु सर्वसु च विभक्तिषु। वच्
नेषु च सर्वेषु यन्तव्येति तदव्ययम्॥ १॥ उक्ता न्यलिङा
न्यव्ययानि। अधुना लिङविशेषविज्ञापयिष्या
स्त्रीप्रत्ययाः प्रस्तूयन्ते॥ आवतः स्त्रिया। अकारा
तान्ताम्नः स्त्रिया वत्तमाना दाप् प्रत्ययो भवति।
जायते ऽस्या पुत्रत्वेन सा जाया॥ माया। मेधा। श्र

(४)

हा। धारा। इत्यादि॥ अजादेश्वा पूर्वक्तव्यः॥ अजाश्वाको
किळावाळावत्सादौ त्रिकळादिके॥ इबादेरपादाधर्म
जादेग्रहलोप्यक्र॥ १॥ अजस्यजातिः॥ स्त्री॥ अजा॥
अश्वा। एडका। को। किळा। वाळा। वत्सा। कन्यका। शूद्रा।
गालिका॥ चकारो विषयव्यवस्थापः॥ तेन शूद्रशब्दा
ज्जातौवाच्यायामाप्। पुंयोगे दुइपू। शूद्रस्य स्वजातिः
स्त्री शूद्रा पुंयोगे दु। शूद्रस्य नाया शूद्रा॥ काप्यतः॥ का
पिइअतः॥ स्त्रिया कापि परे पूर्वस्य अकारस्य इकारादे
शोभतवति॥ अकन्यकादौ॥ कारिका। पाविका। पाठिका॥
वष्टिभागुरिरल्लोपमवाप्यारूपसर्गयोः॥ आप्यचैव

॥७४॥

॥७४॥

(8A)

नित्यं॥ अप्रप्रत्ययसंबंधिनोऽकारात्परस्यशत्रुनित्यं
नुमागमोभवतिइकारेइपिचपरे। पचन्। पचन्ती। पच
ति। क्रीबे। पठन्तीतिपठन्। स्त्रीचेत्। पठन्ती। दीव्यन्ती। बुद
न्तीतिबुदन्। स्त्रीचेत्। बुदन्ती। बुदन्ती। वादीयोशत्रुः। अ
वणात्परस्यशत्रुवानुमागमोभवतिइकारेइपिचपरे॥
क्रीबे। बुदन्। इमौ। बुदन्ती। बुदन्ती॥ नदादेः। नदादेर्मणि
स्त्रियामीप्रप्रत्ययोभवति। नदन्तीतिनदः। स्त्रीचेत्।
नदागोरी। गोतमी। नदादिराकृतिगणः। तेनचतुर्थः।
पंचमी। द्वादशः। यौणमिसी। इत्यादि। इप्रअनडुहोवा
भवत्कथ्यः। अनडाही। अनडुहो॥ हायनादसिच॥ दि

(१)

हायना॥ चतुर्हायणा॥ पुरुषादापरिमाणे॥ दिपुरुषा॥ दि
पुरुषा॥ वापी॥ भित्तिवा॥ इंद्रादेशानीप्रच॥ इंद्रादेर्गणा
हानीप्रप्रत्ययोभवन्ति॥ इंद्रस्यस्त्रीइंद्राणी॥ आदिग्रह
णात्॥ ब्रह्मभवशर्वरुद्रमृडवरुणादयोग्यह्यते॥ ब्रह्म
नृशब्दस्यनकारलोपोवाच्यः॥ ब्रह्माणी॥ भवस्यस्त्रीभ
वानी॥ शर्वाणी॥ रुद्राणी॥ इत्यादि॥ चकारान्मातृकाचार्या
पाध्यायक्षत्रियाणांवाइप्रे॥ आचार्यादिणत्वंच॥ मातृ
कस्यइयंमातृका॥ मातृकाणी॥ आचार्याणी॥ आचार्या
उपाध्यायी॥ उपाध्यायानी॥ आर्याक्षत्रियाभ्यांवास्वा
र्ये॥ आर्याएवंआर्याणी॥ आर्या॥ क्षत्रियाएवंक्षत्रिया

१६

१६

११)

णा॥ क्षत्रिया ईश्वरसमाहारे गुणश्च॥ त्रयाणां समाहारः॥ त्रयी॥
ज्ञातेरयो प्रधातु॥ ज्ञातिवाचिनोऽयकारो यधादकारांतास्त्रि
यामीषु प्रत्ययो भवति॥ मेघस्य ज्ञातिः॥ स्त्री मेघी॥ सूकरो॥
हंसी॥ कुकुरो॥ ब्राह्मण ज्ञातिः॥ स्त्री ब्राह्मणी॥ अयकारो प्रध
ग्रहणात्॥ क्षत्रिया ज्ञातिः॥ स्त्री क्षत्रिया वैश्या॥ पुंयोगे तु
ईश्व॥ क्षत्रियस्य भायश्च क्षत्रियी॥ गवयं हयं मुक्यं मत्स्यं म
नुष्याणां न ईश्वरनिषेधः॥ गवय ज्ञातिः॥ स्त्री गवयी॥ हयी॥
इत्यादि॥ स्त्री मात्र विषया ज्ञातिशब्दान्नेति वक्तव्यं॥ ब
का कामक्षिका॥ हिमारेण्ययोर्महत्त्वे जाना प्रामहत्

(10)

हिर्महिमानी॥महत् अरण्य अरण्यानी॥प्रथमवयवा
चिनोऽतईप्रवक्तव्यः॥कुमारी॥किशोरी॥कलभौ॥प्रथम
ग्रहणात्॥वृद्धा॥स्थविरा॥अद्वयहणात्॥क्षिप्रः॥स्वांगा
दा॥स्वांगवाचिनोस्त्रियामीप्रसूययो भवति॥सुमुखी॥
मृगाक्षी॥तन्वगा॥सुष्ठु आसमीतात् अंगत्वं स्वांगं॥स्व
स्य प्राणिनोवांगस्यो गमितकत्वे अंगांगभावेन ज्ञाना
देरपि अंगत्वं स्यात्॥अतस्तल्लक्षणमाह॥अद्रवमूर्ति
मत्स्वांगप्राणिस्थमविकारजं॥अतस्तत्तत्रदृष्टं चेत्ते ॥२॥
न चेत्तत्तथा युते॥१॥बहुस्वेदा॥द्रवत्वात्॥बहुज्ञानी॥
अमूर्तत्वात्॥दीर्घमुखा॥शाळा॥अप्राणिस्थत्वात्॥

७

(10A)

बहुशोका। विकारजत्वात्। सुकेशी। सुकेशा। रथ्या। अप्रा
लिख्यमपि दृष्टत्वास्वर्गः॥ पृथुस्तनी। पृथुस्तना। प्रति
मा। प्राणिवत्। अप्राणिसदृशो स्थितत्वात्॥ वाशब्दात्क
चिन्नईश्वर। पञ्चवदना। कमलनयना। वदनादिष्वीश्वर
वक्तव्यः॥ बिंबोष्ठा। चारुकर्णा। सुग्रीवा। दंतशब्दाद्वा। सम
दंती। समदंता। नखमुखयोः संज्ञायां क। रूपणखा। गो
रमुख। कृदिकारादत्तेरीपूर्वकव्यः॥ कृत्प्रत्ययसंब
धनइकारात्तान्त्रिकप्रत्ययवर्द्धितान् स्त्रियामाप्रप्रत्य
योवावक्तव्यः॥ अंगुली। अंगुलिः। धूली। धूलिः॥
आङ्गी। आङ्गिः। संग्रामभूमिः। अक्तेरिति विशेष



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com